IJAER/ May-June- 2024/Volume-13/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सहपाठियों के दबाव के प्रभाव का अध्ययन

डा. अनिल रावत
असिस्टेंट प्रोफेसर
भगवती शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, राजस्थान।

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन का वह प्रबुद्ध पहलू है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में मदद करती है। कमल सूर्योदय के साथ खिलता है और सूर्यास्त के साथ मुरझा जाता है, उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश से व्यक्ति प्रबुद्ध हो जाता है और शिक्षा के अभाव में दरिद्र, शोकग्रस्त और दु:खी हो जाता है। इस प्रकार शिक्षा से बच्चे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि सभी आंतरिक गुणों और शक्तियों का विकास होता है साथ ही सौंदर्यबोध का भी। इस प्रकार बच्चा अपने समाज के उत्थान के लिए एक जिम्मेदार कारक और एक मजबूत चरित्र वाला नागरिक बन जाता है अपनी पूरी इच्छा शक्ति और ईमानदारी से देश के सर्वांगीण विकास में मदद करता है, उसे स्वयं के संरक्षण के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है और संस्कृति और विरासत के संरक्षण के लिए भी।

शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है। एक बच्चा अपने जन्म के समय बिल्कुल असहाय होता है। वह इसके लिए पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर रहता है धीरे–धीरे अपनी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं की पूर्ति स्वयं करने लगता है, इस प्रकार वह अपने परिवेश एवं पर्यावरण के प्रति अभ्यस्त या अनुकूलित होता चला जाता है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ तालमेल बिठाने में मदद करती है बल्कि उसके व्यवहार में भी मदद करती है वे परिवर्तन जिनके द्वारा व्यक्ति स्वयं के साथ–साथ उस समाज का भी उत्थान करता है जिसमें वह रहता है।

शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी मानव जाति। सभी जीवित प्राणियों के लिए हर समाज में, प्राचीन या आधुनिक, सरल या जटिल, आदिम या उन्नत शिक्षा के प्रावधान हैं। कोई भी समाज बिना किसी पद्धति के अस्तित्व में नहीं रहा है। अपनी आधारिक आवश्यकताओं जैसे– भोजन, वस्त्र एवं आवास को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहता है। भोजन का उत्पादन, आश्रय और अन्य आर्थिक जरूरतें, कानून, सामाजिक, रीति–रिवाज आदि की प्राप्ति हेतु भी निरन्तर प्रयासरत रहता है। साथ ही धार्मिक विश्वास और आर्थिक उत्पादन के तरीकों का अंतिम कार्य भी शिक्षा एवं शैक्षिक प्रक्रिया पर ही आधारित है। इसे निम्नवत् समझा जा सकता है–

'शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित से वैसे ही श्रेष्ठ है, जैसे जीवित व्यक्ति मृतकों से।'

शिक्षा का समाज और संस्कृति से गहरा संबंध है, क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए समाज लोगों का एक समूह है, जिसके सदस्यों का एक समान लक्ष्य या उद्देश्य होता है जो शिक्षा, सहयोग और जिम्मेदारी के धागों से एक दूसरे से बंधे होते हैं। शिक्षा द्वारा केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है, इससे उसमें नए विचारों का वरण होता हैं संस्कृति और विरासत को संरक्षित करने के लिए, इसमें नए और अच्छे मूल्यों का

परिचय देकर विकसित करने और समाज की प्रगति के लिए उन्हें लागू करने में मदद मिलती है। अत: शिक्षा से ही समाज का वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यात्मक उत्थान संभव है।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। किसी भी समाज के विकास और उसकी शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सक्षम और प्रभावी शिक्षकों का होना अनिवार्य है। शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, ताकि वे छात्रों को उचित मार्गदर्शन और शिक्षा प्रदान कर सकें। इस प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और उनके सहपाठियों से प्राप्त दबाव के बीच के संबंध को समझना आवश्यक है, क्योंकि ये कारक शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य

शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपने शैक्षिक कार्यक्रम को कितनी अच्छी तरह से समझ रहे हैं और इसे किस हद तक अपने व्यावहारिक जीवन में लागू कर सकते हैं। इस संदर्भ में, यह जानना जरूरी है कि सहपाठियों का दबाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को कैसे प्रभावित करता है। सहपाठी समूह शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी हो सकते हैं, लेकिन कई बार सहपाठियों का दबाव नकारात्मक रूप से भी काम कर सकता है।

कई बार सहपाठियों के बीच की प्रतिस्पर्धा शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को अधिक मेहनत करने और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करती है। वे अपने सहपाठियों से ज्ञान और अनुभव साझा करते हैं, जिससे शैक्षणिक क्षमता में वृद्धि होती है। दूसरी ओर, जब सहपाठी समूहों के बीच अनुचित प्रतिस्पर्धा होती है या प्रशिक्षार्थी सहपाठियों की अपेक्षाओं का दबाव महसूस करते हैं, तो यह मानसिक तनाव और असफलता की आशंका बढा सकता है। इससे उनके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है और शैक्षणिक प्रदर्शन में गिरावट आ सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कई शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि सहपाठियों का दबाव छात्रों के मानसिक, भावनात्मक और शैक्षिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। इसलिए, शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के संदर्भ में यह अध्ययन अत्यधिक प्रासंगिक है, क्योंकि यह जानना आवश्यक है कि वे सहपाठियों के दबाव को कैसे प्रबंधित करते हैं और यह दबाव उनके शैक्षिक प्रदर्शन को किस हद तक प्रभावित करता है?

अध्ययन की आवश्यकता

इस अध्ययन की आवश्यकता कई कारणों से है, जो निम्नलिखित बिंदुओं में समाहित किए जा सकते हैं—

- **शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार—** शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को समझने से यह पता चलेगा कि वे किस प्रकार से शैक्षणिक उद्देश्यों को प्राप्त कर रहे हैं? इससे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता को और बेहतर बनाया जा सकता है, ताकि प्रशिक्षार्थियों को उचित सहायता और मार्गदर्शन मिल सके।

- **सहपाठियों के दबाव का विश्लेषण—** सहपाठी समूह का प्रभाव कई बार प्रशिक्षार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित कर सकता है। यह अध्ययन इस दबाव के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करेगा, जिससे भविष्य में शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को इस दबाव से निपटने के लिए आवश्यक रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।
- **शिक्षा नीति में सुधार—** अध्ययन के निष्कर्षों से शिक्षा नीति निर्माताओं को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहपाठी दबाव और शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच के संबंध को ध्यान में रखकर आवश्यक बदलाव करने का अवसर मिलेगा। इससे प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।
- **व्यक्तिगत विकास—** प्रशिक्षार्थियों को इस अध्ययन से यह समझने में मदद मिलेगी कि वे सहपाठियों के दबाव को सकारात्मक दिशा में कैसे उपयोग कर सकते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वे शैक्षणिक उद्देश्यों को बेहतर ढंग से प्राप्त कर सकेंगे।
- **समूह गतिकी का अध्ययन—** सहपाठियों के बीच का आपसी सहयोग, प्रतिस्पर्धा और दबाव समूह गतिकी का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। यह अध्ययन प्रशिक्षार्थियों के समूह गतिकी और उसके प्रभावों को समझने में सहायक होगा।

शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि और सहपाठियों के दबाव के बीच के संबंध को समझने के लिए यह अध्ययन न केवल शिक्षकों की गुणवत्ता सुधारने में सहायक होगा, बल्कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रमों को भी अधिक प्रभावी बनाएगा। सहपाठियों का दबाव शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित कर सकता है और इसे समझना आवश्यक है ताकि प्रशिक्षार्थियों को आवश्यक सहायता और संसाधन प्रदान किए जा सकें।

समस्या कथन

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सहपाठियों के दबाव के प्रभाव का अध्ययन

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

शिक्षक प्रशिक्षणार्थी

प्रस्तुत शोध में शिक्षक—प्रशिक्षणार्थियों से तात्पर्य बी. एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों से है।

शैक्षिक उपलब्धि

आज व्यक्ति के जीवन में वैयक्तिक भिन्नता का ज्ञान, हमने किसी कार्य को कितना सीखा इसका ज्ञान उपलब्धि के द्वारा होता है। मनोविज्ञान के परीक्षणों की श्रृंखला के प्रयोग में आने वाली उपलब्धि का शैक्षणिक जीवन में अत्यंत महत्व है विद्यार्थी के चयन, उन्नति एवं तुलनात्मक अध्ययन आदि में इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों के विषय संबंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। शैक्षिक उपलब्धि का

अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में आवश्यक है इससे विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर का पता चलता है। शैक्षिक उपब्धि के अर्थ एवं भाव को अधिक स्पष्ट करने के लिए विद्वानों ने परिभाषाएं दी है जो इस प्रकार हैं—

गैरिसन— 'शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है।'

सहपाठी दबाव

साथियों का दबाव तब होता है जब आप अन्य लोगों (अपने साथियों) से प्रभावित होकर एक निश्चित तरीके से कार्य करते हैं । यदि आप ऐसे दोस्तों के साथ हैं जो कुछ ऐसा कर रहे हैं जो आप आमतौर पर नहीं करते हैं और वे आपको वह करने के लिए मनाते हैं जो वे कर रहे हैं, तो यह साथियों के दबाव का एक उदाहरण है।

सहपाठी दबाव अनुरूपता के विचार के समान है। यह तब होता है जब किसी व्यक्ति को ऐसा महसूस होता है जैसे उसे ऐसा करने की जरूरत है वही बातें जो लोगों को उनकी उम्र या उनके सामाजिक समूह में पसंद की जाती हैं या स्वीकार की जाती हैं। उस आत्मीयता और सम्मान को हासिल करने के लिए, कुछ व्यक्ति उन चीजों में फिट होने और उनके जैसा बनने के लिए ऐसी चीजें करेंगे जो उन्हें नहीं लगता कि उन्हें करनी चाहिए या ऐसी चीजें जिनके लिए वे तैयार नहीं हैं। नकारात्मक सहकर्मी दबाव किसी व्यक्ति को उन चीजों के बारे में बुरा महसूस करा सकते हैं जो वे कर रहे हैं, भले ही वे उन्हें लगातार करते रहें।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

1. उच्च और निम्न सहपाठियों के दबाव के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच अंतर का अध्ययन करना।
2. पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सहपाठियों के दबाव के बीच अंतर का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें

परिकल्पनाएँ अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा शोधार्थी अपनी समस्या को समझ सकता है—

1. उच्च और निम्न सहपाठियों के दबाव के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सहपाठियों के दबाव के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का परिसीमन

अन्य सभी शोधों की तरह, यह अध्ययन समय और संसाधनों द्वारा लगाई गई सख्त सीमाओं के तहत किया गया है।

1. प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जिले के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन मेरठ जिले के शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श 110 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

जेफ्री (2020) ने 'मिडलैंड्स प्रांत में हाई स्कूल के छात्रों के बीच कैरियर निर्णय लेने के पूर्वसूचक के रूप में साथियों का दबाव' शीर्षक से एक अध्ययन किया। इस शोध ने हाई स्कूल के छात्रों के बीच करियर विकल्पों को प्रभावित करने में साथियों के दबाव की भूमिका की जांच की। अध्ययन में मात्रात्मक अनुसंधान दृ ष्टिकोण का उपयोग किया गया, जिसमें 1010 छात्र और 20 कैरियर मार्गदर्शन शिक्षक शामिल थे। डेटा को एक सर्वेक्षण डिजाइन के माध्यम से एकत्र किया गया और वर्णनात्मक आंकडों का उपयोग करके विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि जब छात्र अपने करियर विकल्पों से संबंधित सलाह, प्रोत्साहन और शैक्षिक जानकारी प्राप्त करने की बात करते थे तो वे अपने साथियों से प्रभावित होते थे। हालाँकि, छात्र अपने अंतिम करियर निर्णयों को मान्य करने के लिए अपने साथियों पर निर्भर नहीं थे। अध्ययन में निष्कर्षों को सामान्य बनाने और विभिन्न क्षेत्रों में कैरियर निर्णय लेने पर साथियों के प्रभाव में अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए व्यापक राष्ट्रीय अनुसंधान की आवश्यकता का सुझाव दिया गया है।

हाशिम और एम्बोंग (2015) ने यह जांचने के लिए एक व्यापक अध्ययन किया कि मलेशियाई स्कूली छात्रों के माता—पिता और साथियों ने उनके करियर विकल्पों को किस हद तक प्रभावित किया, खासकर लेखांकन में करियर बनाने में। अध्ययन में डेटा इकट्ठा करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों को शामिल करते हुए एक मिश्रित—विधि अनुसंधान डिजाइन को नियोजित किया गया। लेखांकन सिद्धांतों या वाणिज्य पाठ्यक्रमों में नामांकित कुल 309 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने उत्तरदाताओं के रूप में भाग लिया। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि अधिकांश छात्रों ने इन विषयों का अध्ययन करने के अपने निर्णय में साथियों के प्रभाव को एक महत्वपूर्ण कारक बताया। यह उस महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है जो सहपाठी अकादमिक विकल्पों को आकार देने में साथ निभाते हैं, खासकर वाणिज्य से संबंधित करियर के संदर्भ में।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि

शोध अध्ययन विधि से तात्पर्य नवीन वस्तुओं का अन्वेषण तथा पुराने सिद्धान्तों का पुन: परीक्षण करना जिससे नये तथ्यों की प्राप्ति हो सके। शोध विधि के अर्न्तगत सत्य की खोज या समस्या के कारणों का पता लगाना है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने लक्ष्य को निर्धारित करते हुए **'वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि'** का प्रयोग किया है। यह शोध विधि सबसे उपयुक्त पाई गई।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए मेरठ जिले के 5 शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों 110 (55 पुरुष और 55 महिला) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

शोधार्थी ने अमनप्रीत कौर द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सहपाठी दबाव मापनी का उपयोग किया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन के सन्दर्भों में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी प्रविधि जैसे— मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना के पश्चात् निम्नवत् परिणाम प्राप्त हुए है—

तालिका सं०— 1

उच्च और निम्न सहपाठियों के दबाव के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी—मान
उच्च सहपाठी दबाव	78	88.92	2.06	0.558	5.162
निम्न सहपाठी दबाव	32	86.04	3.75		

तालिका 1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में उच्च सहपाठी दबाव से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=88.92) तथा मानक विचलन 2.06 प्राप्त हुआ एवं निम्न सहपाठी दबाव का मध्यमान (M_2=86.04) तथा मानक विचलन 3.75 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में उच्च एवं निम्न सहपाठियों के दबाव की मानक त्रुटि क्रमशः 0.558 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 5.162 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 118 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना 'उच्च और निम्न सहपाठी दबाव के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

तालिका सं०— 2

पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सहपाठी दबाव की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी—मान
पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	55	96.56	6.71	1.382	2.633
महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	55	100.20	7.75		

तालिका 2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सहपाठी दबाव से सम्बन्धित आंकड़ों का मध्यमान (M_1=.96.56) तथा मानक विचलन 6.71 प्राप्त हुआ एवं महिला शिक्षक

प्रशिक्षणार्थियों में सहपाठी दबाव का मध्यमान (M_2=100.20) तथा मानक विचलन 7.75 प्राप्त हुआ। पुरूष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सहपाठी दबाव की मानक त्रुटि क्रमश: 1.382 पायी गयी। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी–मूल्य 2.633 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 118 पर सारणी में दिए गए टी–मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के सहपाठी दबाव के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है।

अध्ययन के निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि हमारी परिकल्पना H_1 अस्वीकार कर दी गई है। परिकल्पना में H_1 उच्च एवं निम्न सहपाठी दबाव वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को दर्शाता है। जब छात्र दबाव को सकारात्मक तरीके से लेते हैं और H_2 को स्वीकार किया जाता है क्योंकि पुरुष और महिला सहपाठी दबाव में अंतर है क्योंकि दोनों साथियों का दबाव एक ही भूमिका निभाता है। इसके अलावा, बीच में सांस्कृतिक पालन–पोषण माता–पिता और सामाजिक जुड़ाव टी–टेस्ट की गणना के परिणाम के आधार पर शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान में पुरूष प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। यह प्रकट हुआ था कि पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की जिज्ञासा और शिक्षा का स्तर छात्र शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है। इस तरह, छात्र साथियों के दबाव का जो भी प्रभाव हो, वह अपने साथियों के प्रति उनके दृष्टिकोण पर आधारित होता है और यह स्थानीयता के अनुसार भी भिन्न होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- **अजवानी, जे.सी. एवं वर्मा, संन्ध्या** (2004) 'ए स्टडी ऑफ वैल्यूज एज दा कोरिलेट्स ऑफ मोरल वैल्यू' जरनल ऑफ साइको–कल्चरल डाइमेंशन्स, 20(2), 124-125

2- **अनुराधा, के एवं भारती, वी.** (2000) 'टी.वी. व्यूइगिं एण्ड चिल्ड्रन्स एकाडमी अचीवमेंट विद रेफरेन्स टू पनिशमेंट पैटर्न एक्सरसाइज्ड वाई पेरेन्ट्स' साइको–लिंग्वा, 31(1), 9-13

3- चंद,एस.**के.** (1992) 'ए स्टडी ऑफ पर्सनल वैल्यूज ऑफ अडोलेसेन्ट बायज एण्ड गर्ल्स इन रिलेशन टू सोशल–इकोनॉमिक स्टेट्स एण्ड अकाडमिक अचीवमेंट' एम.फिल. डिजरटेशन, उत्कल विश्वविद्यालय।

4- चाधरी, विनीता (2007) 'ए कोरिलेशन स्टडी ऑफ लेवल ऑफ एस्पाइरेशन एण्ड अकादमिक अचीवमेंट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स' साइको–लिंग्वा, 11(1), 33-34

5- **दीपिका, के.** (2017) 'पियर प्रेशन इन रिलेशन टू अकादमिक अचीवमेंट ऑफ डेवियन्ट स्टूडेंट्स' इण्टरनेशनल जरनल ऑफ एनवायरनमेंट एण्ड साइंस एजूकेशन, 12 (8), 1931-1943

6- **गाखर, मेघा** (2006) 'अकादमिक अचीवमेंट एज डिटरमाइंड बाई देयर पेफर्ड लर्निंग थिंकिंग स्टूल्स एण्ड स्टडी स्किल्स' साइको–लिंग्वा, 29(II), 26-35